॥ओ३म्॥

वेदों की ओर लौटो।

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

● वर्ष : १८ ● अंक : ६ ● जून २०१८

छात्रनिर्माता पू.स्वामी श्रद्धानंदजी (हरिश्चंद्र गुरुजी) जन्मशताब्दी समारोह

दि. २८,२९ अप्रैल २०१८ ❋ **चित्रमय झलकियाँ** ❋ स्थान : गुरुकुल आश्रम, परली वै.

प्रान्तीय आर्य संगठन के नये पदाधिकारियों व सदस्यों का अभिनन्दन×

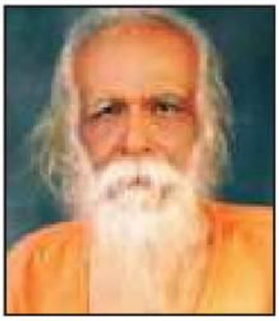

स्वामी श्रद्धानन्दजी(संरक्षक)

डॉ.ब्रह्ममुनिजी(संरक्षक)

योगमुनिजी(प्रधान)

राजेंद्रजी दिवे(मंत्री)

उग्रसेनजी राठौर(कोषाध्यक्ष)

दयारामजी बसैये(उपप्रधान)

आनन्दमुनिजी(उपप्रधान)

प्रमोदकुमारजी तिवारी(उपप्रधान)

लखमसीभाई वेलानी(उपमंत्री)

शंकरराव बिराजदार(उपमंत्री)

प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी(उपमंत्री)

ज्ञानकुमारजी आर्य(पुस्तकाध्यक्ष)

पं.सुधाकरजी शास्त्री

(वेदप्रचार अधिष्ठाता)

व्यंकटेशजी हालिंगे

(आर्यवीरदल अधिष्ठाता)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११९ | कलि संवत् ५११९ | विक्रम संवत् २०७५
दयानन्दाब्द १९४ | अ.ज्येष्ठ/निज ज्येष्ठ | १० जून २०१८

प्रधान सम्पादक
माधव के.देशपांडे
(९८२२२९५५४५)

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ.ब्रह्ममुनि
(९४२१९५११९०४)

सम्पादक
डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक
प्रा.देवदत्त तुंगार(९३७२५४१७७७) प्रा.ओमप्रकाश होलीकर(९८८१२१५६१६), प्रा.सत्यकाम पाठक(९९७०५६२३५६), ज्ञानकुमार आर्य(९६२३८४२२४०)

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१)	श्रुतिसुगंध	४
२)	सम्पादकीय	५
३)	स्वामी श्रद्धानन्द(गुरुजी) जन्मशताब्दी समारोह (विस्तृत रिपोर्ताज)	६
४)	महाराष्ट्र सभा का निर्वाचण व नये पदाधिकारी	१२
५)	गुरुकुल परली के नये आचार्य	१५
६)	शोकसमाचार	१६

मराठी विभाग

१)	उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी	१७
२)	श्रावणी पर्वाचे यथार्थ स्वरूप	१८
३)	महाराष्ट्र राज्याचा श्रावणी कार्यक्रम (कार्यक्रम विवरण)	२२
४)	शतायुषी मातेची जन्मशताब्दी	२८
५)	राज्यस्तरीय दोन निबंध स्पर्धा-बक्षीस	२९
६)	सभा उपक्रम	३०

✲ प्रकाशक ✲
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

✲ मुद्रक ✲
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रु.१००/-
आजीवन रु.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा ।

श्रुतिसुगंध — धर्मात्माओं का व्यवहार..

सुमित्रिया नऽआपऽओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु ।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः।। (यजु.३५/१२)

पदार्थान्वय- हे मनुष्यो× जो**(आपः)** प्राण वा जल तथा**(ओषधयः)** सोमादि औषधियां**(नः)** हमारे लिये **(सुमित्रियाः)** सुन्दर मित्रों के तुल्य हितकारिणी **(सन्तु)** होवें, तुम्हारे लिये भी वैसी हों। **(यः)** जो **(अस्मान्)** हम धर्मात्माओं से **(द्वेष्टि)** द्वेष करता**(च)** और **(यम्)** जिस दुष्टाचारी से **(वयम्)** हम लोग**(द्विष्मः)** अप्रीति करें, **(तस्मै)** उसके लिये वे पदार्थ**(दुर्मित्रियाः)** शत्रुओं के तुल्य दुःखदायी **(सन्तु)** होवें।

भावार्थ – जो राग-द्वेष आदि दोषों को छोडकर सबमें अपने आत्मा के तुल्य बर्ताव करते हैं, उन धर्मात्माओं के लिये सब जल, औषधि आदि पदार्थ सुखकारी होते और जो स्वार्थ में प्रीति तथा दूसरों से द्वेष करनेवाले हैं, उन अधर्मियों के लिये ये सब उक्त पदार्थ दुःखदायी होते हैं। मनुष्यों को चाहिये कि धर्मात्माओं के साथ प्रीति और दुष्टों के साथ निरन्तर अप्रीति करें। परन्तु उन दुष्टों का भी चित्त से सदा कल्याण ही चाहें।

सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिषि। (अथर्व-१/१/४)

(हे ईश्वर × हम जो कुछ वेदवचन सुनें, उससे संयुक्त हो जाये। वह वेदज्ञान हमारे जीवन का अंश बन जाय तथा जो कुछ सुने, उससे हमें वियुक्त मत करो।)

वेद स्वाध्याय, चिन्तन व मनन पर्व तथा जीवन को

आध्यात्मिक पथ पर ले जानेवाले

श्रावणी उपाकर्म (वेदप्रचार) पर्व

(१२ अगस्त से ९ सितम्बर २०१८)एवं

भारतीय स्वतन्त्रता दिवस

के पावन उपलक्ष्य में

सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं ×

संपादकीयम् जाति आरक्षण-एक त्रासदी×

आरक्षण को लेकर भारतीय समाज व राजनीति सम्प्रति सर्वाधिक प्रभावित है। जगह-जगह सम्प्रदाय व जाति के आधारपर आरक्षण की माँग बढ रही है। इसके लिए उग्र आन्दोलन भी हो रहे हैं। डॉ.आम्बेडकरजी का उद्देश्य ÷आरक्षणद्वारा दलित व पिछडा वर्ग स्वावलंबी बनें' यह था। इसलिए उन्होंने आरम्भिक दस वर्ष तक आरक्षण की बात कही थी और कहा था, ÷दस वर्ष के बाद आरक्षण पानेवालों की समीक्षा की जाये× यदि इनका विकास होता हो, तो अगली पीढी को इसका लाभ नहीं होना चाहिए। क्योंकि आरक्षण का अर्थ बैसाखी नहीं है, जिसके आधार पर एकही वर्ग या व्यक्तिविशेष आजीवन इसका लाभ उठा न सके।' इस बात को यदि हम निरपेक्ष भाव से देखते हैं, तो निश्चय ही जिन्हें आरक्षण का लाभ मिला और वे आर्थिक दृष्टि से बडे हो गये, उनका आरक्षण समाप्त होना चाहिए। आज आम्बेडकरजी की यह बात कोई मानेगा? आज तो यह आरक्षण पीढियों से उपभोगा जा रहा है और न जाने आगे भी कितने वर्ष तक? पहले तो यह समझ लेना चाहिये कि कोई भी सुविधा, चाहे वह आरक्षण हो या अन्य× जिस आर्थिक विषमता को लेकर उसकी माँग की जाती हो, उसका आधार भी वही होना चाहिये, न कि जन्मगत जाति या सम्प्रदाय× क्योंकि इससे मानवमात्र विभाजित होता है। संकीर्णता की दीवारें खडी होती हैं। हर एक समूह अपने मजहब व जाति का विचार करेगा, तो राष्ट्रीय एकता व अखण्डता कैसे रहेगी? अतः आर्थिक आधारपर ही आरक्षण का प्रावधान हो, क्योंकि अमीरी या गरिबी सभी में होती है।

एक समय यदि किसी वर्ण या जातिने अपने वर्चस्व से आरक्षण प्राप्त किया हो, तो वह भी अनुचित है और आज जब इसी को आधार बनाकर आरक्षण की बात चलती हो, तो यह भी पूरी तरह से गलत है। आज ७० वर्षों के बाद जिस किसी को आरक्षण मिला, फलस्वरूप सम्पन्नता प्राप्त हुयी हो, तो उन्हें स्वयं ही आरक्षण से दूर रहना चाहिए। जिन पंथ व जाति को हम तोडने की बात कर रहे हैं, उन्हींके आधारपर यदि आरक्षण की सुविधायें व उनकी मांग बढती हो, तो उसे स्वीकार न करते हुए आर्थिक आधार मानकर ही सभी को एक समान न्याय से आरक्षण देना समुचित होगा। चाहे इसके लिए पहले से आयी परम्परागत आरक्षण प्रणाली को तोडना भी पडे, तो राष्ट्र के हित में यह कदम उठाना सर्वतोपरी कल्याणप्रद होगा, अन्यथा यह आरक्षण की त्रासदी देश के लिए बहुत ही हानिकारक बन जायेगी। आर्य समाज वेद के आधार पर सभी को समान आरक्षण की बात पहले से करता आया है।

<u>अज्येष्ठासो अकनिष्ठासो एते सं वावृधुः सौभगाय।</u> - नयनकुमार आचार्य

द्विदिवसीय कार्यक्रमों के साथ

स्वामी श्रद्धानन्द(गुरुजी)जन्मशताब्दी समारोह सोत्साह सम्पन्न

÷गुरुजी के प्रेरक कार्य से समाज का नवनिर्माण'

÷वैश्विक सभी बिमारियों की दवा है - आर्य समाज'

-प्रसिद्ध विचारक डॉ.जनार्दनराव वाघमारे

÷अन्तिम क्षणों तक ईश्वराज्ञा में रहुंगा' - स्वामी श्रद्धानन्दजी

÷गुरुजी ने आर्य समाज को आगे बढाया' - डॉ.ब्रह्ममुनिजी

राष्ट्र की आधारभूत दिव्य शक्ति के रूप में पहचानी जानेवाली छात्रशक्ति को मानवता का पथ दर्शाकर जगानेवाले महान समाजसेवी तपस्वी व्यक्तित्त्व ÷पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती(हरिश्चन्द्र गुरुजी) का जन्मशताब्दी समारोह' हालही में उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में महाराष्ट्र सभा एवं आर्य समाज, परली के संयुक्त तत्वावधान में दि.२८ व २९ अप्रैल को श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

दूसरे दिन २९ जून को प्रात: स्वामीजी मुख्य शताब्दी समारोह में मुख्यातिथि व प्रमुख मार्गदर्शक के रुप में ख्यातकीर्त शिक्षणतज्ज्ञ व विचारविद् पूर्व सांसद डॉ.जनार्दनरावजी वाघमारे उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता स्वाधीनता सैनिक श्री आनन्दमुनिजी (मन्मथअप्पा चिल्ले) ने की। इस अवसरपर डॉ.वाघमारेजी के विस्तृत मौलिक उद्बोधन से उपस्थित आर्यजन व श्रोतागण काफी मंत्रमुग्ध हुए। अपने चिन्तनपर भाषण में उन्होंने पू.गुरुजी का प्रेरक व्यक्तित्त्व, म.दयानन्द का कार्य, आर्य समाज का दशा व दिशा, आर्यों के कर्तव्य, समाज का नवनिर्माण विश्व की बिगडती दयनीय दशा में आर्य समाज की भूमिका आदि विषयों को बहुत प्रभावशाली ढंग से सामने रखा।

पू.हरिश्चन्द्रजी गुरुजी (श्रद्धानन्दजी) के विषय में उन्होंने कहा- ÷गुरुजी जैसा कार्य करनेवाला पवित्रात्मा आजकल मिलना कठिन है। पुस्तकों का पाठ पढानेवाले स्कूली टीचर्स व अध्यापक तो बहुत सारे मिलेंगें, किन्तु गुरुजीसम कार्य करनेवाले समाज के पथप्रदर्शक मिलना नाममुकिन है। आज ÷गुरुजी' की व्याख्या में बैठनेवाला शायद ही कोई एक मिलेगा। ऐसे गुरुजी प्रत्येक ग्राम में उत्पन्न होंगें, तो देश सुधरेगा और समाज की दिशा भी बदलेगी। बच्चों का निर्माण करने व उन्हें संस्कारित करने हेतु उन्होंने अपना सर्वस्व लगाया। जैसे शिल्पकार सुन्दर शिल्प तैयार करता है, या कोई चित्रकार बढिया चित्र रेखांकित करता है, उसी तरह गुरुजी ने

स्कूल व कॉलेज के छात्रों से सम्पर्क कर उन्हें आदर्श मानव के रूप में संस्कारित व आकारित किया तथा उन्हें वैदिक मानवता सन्देश सुनाया। गुरूजी के उपदेशों से अनेक नवयुवकों की दिशा ही बदल गयी। सरल, मधुर तथा मन को हृदय को छू जानेवाला उनका उपदेश युवक व छात्र सुनते और अपने अन्दर की अविद्या, अन्धविश्वास, बुरी आदतें व परम्परागत जाति-पाति के विचारों को त्यागतें। एक ईश्वर, एक मानव धर्म व एक मनुष्यजाति, ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता, सेवा, परोपकार, राष्ट्रभक्ति आदि का स्वीकार करतें। गुरुजी के कारण ही मानवीय मूल्याधिष्ठित नवसमाज का निर्माण होने में मदद मिली है। ऐसे वन्दनीय गुरुजी के डॉ.ब्रह्ममुनिजी जैसे अनेकों शिष्य आज भी समाज व राष्ट्रीय कार्यों में योगदान दे रहें हैं, यह बात बहुत ही गौरव का विषय है।'

उन्होंने आगे कहा-÷गुरुजी कम पढ-लिखे हैं, फिर भी उन्होंने किसी विद्वान् या प्रचारक से बढकर काम किया। साधा व सरल व्यक्तित्त्व, लेकिन कार्य महानतम दिव्य कार्य× उन्हें किसी ने नहीं पढाया× वे स्वयं ही अपने गुरु बन गये। वह समय हैदराबाद स्वतन्त्रता आन्दोलन का था, तब आर्य समाज का कार्य जोरोपर था, ऐसे में गुरुजी को दयानन्दकृत ÷**सत्यार्थ प्रकाश**' नामक ग्रन्थ मिल गया। उसके स्वाध्याय से उन्हें सत्य, सनातन वैदिक विचारधारा ज्ञात हो गयी। वे सर्वतोमना सत्य के पथिक बन गये। देश, समाज व मानवजाति के लिए अपना जीवन देने के लिए संकल्पबद्ध हो गये। राष्ट्र की छात्र शक्ति को मानवता की राह बताने के लिए आजन्म ब्रह्मचारी रहकर काम करने की भीष्म प्रतिज्ञा की, जिसे उन्होंने जीवनभर दृढता के साथ निभाया। हैदराबाद संग्राम में सम्मिलित हुए। हिन्दी सत्याग्रह व गोवा मुक्ति आन्दोलन में भाग लिया। विद्यार्थियों के नवनिर्माण के लिए घर का मोह त्याग दिया। चार दीवारी स्कूल में काम करनेवाला शिक्षक न बनकर ग्राम-ग्राम व नगर-नगर के शिक्षालयों में पहुंचकर वहां के प्रांगण में ही निजी खुला संस्कारालय चलाया। न जाने कितने ही संकटों व कष्टों को झेंलकर गुरुजी ने एक ऐसे नवसमाज का गठन किया, जो देश के लिए बहुत बडी उपलब्धि है। जो कार्य शासन या सामाजिक संस्थाओं से नहीं हो सका, वह कार्य गुरुजी नामक एक व्यक्तिरूप संस्था ने कर दिखलाया हैं। दुर्भाग्य से ऐसे महान व्यक्तित्व के कार्यों से शासन भी अनभिज्ञ है। आर्य समाज भी इनके काम को पहचान न पाया। इसके विपरीत गुरुजी के कारण ही आर्य समाज को बल मिला और यह संगठन आज आगे बढ रहा है। ऐसे गुरुजी के

लिए मैं अगली शतायु की काम करता हूं।'

अपने वक्तव्य में डॉ.वाघमारेजी ने ग्रीस देश के सूकरात व भारत के महर्षि दयानन्द इन दो महापुरुषों के कुछ क्रान्तिकारी प्रसंग सुनाये। महर्षि के विषय में उन्होंने कहा–÷मथुरा के तपस्वी संन्यासी प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द दण्डी ने दयानन्द को दक्षिणा में सारा जीवन ही मांगा और दयानन्दने वह नि:संकोच दे दिया।

म.दयानन्द ने वैदिक विचारों को प्रचार–प्रसार हेतु अपना सर्वस्व लगा दिया। सन् १८७५ में मुम्बई में ÷आर्य समाज' की स्थापना की, लेकिन इसका अधिकतर विस्तार पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान में हुआ। उससे पूर्व ब्राह्म समाज, सत्यशोधक समाज, प्रार्थना समाज जैसी संस्थाएं स्थापित हुई, लेकिन उनका जादा प्रचार–प्रसार नहीं हो पाया, परन्तु आज डेढ सौ वर्षों में म.दयानन्द के अनुयायियों ने आर्य समाज को अधिक पैमाने पर बढाया। यदि हैदराबाद में निजाम का राज्य न होता, तो शायद यहां पर आर्य समाज का प्रवेश तक न होता। राजर्षि शाहू महाराज के कारण कोल्हापुर संस्थान में आर्य समाज स्थापित हुआ। वेदोक्त प्रकरण के फलस्वरूप बहुजनों को वेदाधिकार मिल गया।

महर्षि दयानन्द ने वर्ण व्यवस्था गुण–कर्म व स्वभावानुसार बनायी। बालविवाह, मूर्तिपूजा, अवतारवाद आदि के विरुद्ध स्वामीजी व आर्य समाज ने आवाज उठाई। ÷आर्य समाज' का इतिहास क्रान्तिकारी रहा है, लेकिन आज यह संगठन किस स्थिति में है? इसपर विचार होना चाहिए। सम्प्रति आर्य समाज रूक गया है। **÷यह पीछे भी तो नहीं जा रहा और आगे भी बढ नहीं रहा है।'** केवल सभा–सम्मेलन, वार्षिक उत्सव जैसे निर्धारित कार्यक्रमों व उपक्रमों तक इसे सीमित रहना नहीं चाहिए, वरना इससे आगे बढना आवश्यक है। दयानन्द ने प्रतिकूल स्थितियां होते हुए भी कम समय में इतना बडा काम किया। आज बहुत कुछ अनुकूल होते हुए और सही अर्थों में सत्य वेदज्ञान की अत्यावश्यकता होते हुए आर्य समाज व इसके अनुयायी पीछे है । आज मूर्तिपूजा का प्रश्न जैसा के वैसा ही है। जाति–पाति व साम्प्रदायिकता गतिमान है। सनातनी लोग वेद, यज्ञ, अध्यात्म की बातें करते हैं, वे अपनी जाति नहीं छोडते उसमें थोडासा सुधारकर हम भी वेदादि का ही प्रचार करते है, तब उनमें और हममें क्या अन्तर रहा? हमें अब नई तकनीकी व वैज्ञानिक संसाधनों का प्रयोग करते हुए बहुत ही सक्रिय होकर आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रसार करना होगा।'अन्त में डॉ.वाघमारेजी स्वामीजी के इस सम्मान कार्यक्रम को कृतज्ञता गौरव समारोह बताया।

इससे पूर्व सभाप्रधान एवं समारोह मुख्य संयोजक डॉ.ब्रह्ममुनिजी ने इस समारोह को सफल बनाने हेतु प्रयासरत आर्य कार्यकर्ताओं तथा परली आर्यसमाज का अभिनन्दन किया। गुरुजी के विषय में उन्होंने कहा - ÷÷महाराष्ट्र के इस भूमिपुत्र ने सौ वर्ष के सुदीर्घ जीवनकाल में स्वयं को सर्वदृष्टि से पवित्र व पूर्णतया निष्कलंक सिद्ध कर यशस्वी बना दिया है। उन्होंने भले ही आर्य समाज का नाम न लिया हो, लेकिन कार्य तो आर्य समाज का ही किया है। अपने शिष्यों (छात्रों) को इसी के सिद्धान्तों का उपदेश देकर उन्हें एक ईश्वर, एक धर्म(वेद), मानवता का अनुयायी बनाया है। ऐसा होते हुए भी कुछ लोग गुरुजी का आर्य समाज से कोई सम्बन्ध नहीं है, यह बताते हैं, सो गलत है। गुरुजी ने आर्य समाज के गौरव को बढाया है, उन्हीं निर्देशन में गुरुकुल संचालित है, तो हमारा कर्तव्य था कि उनकी जन्मशताब्दी मनायें। अत: यह समारोह आयोजित करने का सुअवसर मिला।''

अपने वक्तव्य को रखते हुए गुरुजी(स्वामीजी) ने कहा- ÷सभा व आर्य समाज परली ने मेरी शताब्दी पर जो सम्मान समारोह रखा है, इसलिए मैं उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। मेरा समग्र जीवन ईश्वरीय आज्ञा के अनुसार विद्यार्थियों का नवनिर्माण करने तथा उनहें वैदिक मार्ग पर लाने हेतु व्यतीत हुआ है। मैं यह कार्य जीवन के अन्तिम क्षणों तक करता रहूंगा।'

आज की बिगडती स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए स्वामीजी ने कहा-÷सम्प्रति देश का वातावरण बहुतही खराब हो चुका है। टी.वी., मोबाईल के कारण बच्चे व युवक-युवतियाँ का नैतिक दृष्टि से अध:पतन हो रहा है। हत्या, बलात्कार की घटनाएं दिन ब दिन बढ रही हैं।

रात-दिन पैसा का कमाने की चक्कर में दुनिया अच्छाई के रास्ते से भटक गयी है। ऐसे में आर्य समाजों व आर्य सभाओं की जिम्मेदारी बढती है। लेकिन दु:ख इस बात का है कि बाहर की भ्रष्ट राजनीति व पदलोलुपता का प्रवेश हमारी सभाओं व आर्य समाजों में होने से अब राष्ट्र व समाज को कौन दिशा देगा? आज की व्यवस्था में प्रजाहित के बजाय नेताओं के हित-सम्बन्धों को प्राथमिकता दी जा रही है। अत: हमारा लोकतन्त्र खतरे में है।'

अध्यक्षीय समापन भाषण में स्वा.सै.आनन्दमुनिजी ने कहा-÷गत ४५ वर्षों से मेरा गुरुजी के साथ स्नेहसम्बन्ध है। मेरे पुत्र श्री वैजनाथ (मुख्य अभियंता, पुणे) गुरुजी के शिष्यों में से एक हैं। शतवर्षीय इस महात्मा (गुरुजी) ने जो कार्य किया है, वह अब शायद ही कोई करेगा ? मैं उनके आनन्दमय जीवन की कामना करता हूँ।'

इस विशाल समारोह में डॉ.श्री वाघमारेजी के शुभकरकमलों से पू.गुरूजी(स्वामीजी) का गेरुएं, वस्त्र, शाल, गौरवचिह्न एवं पुष्पहार प्रदान कर अभिनन्दन किया गया। साथ ही उपस्थित मान्यवरों का आर्य समाज परली द्वारा स्वागत सम्मान किया गया। प्रस्तावना आर्य समाज के उपप्रधान तथा सभा के वेदप्रचार (अधिष्ठाता) श्री लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी ने की। सर्वश्री जुगलकिशोरजी लोहिया(प्रधान),आचार्य ब.नन्दकिशोरजी, पं.प्रियदत्तजी शास्त्री, उग्रसेनजी राठौर, गुरुजी के शिष्य डॉ.बी.एम.मेहेत्रे, डॉ.राजाराम मुंडे, एड. देवेन्द्र बसप्पा आगसे(सोलापुर), कवयित्री सौ.इन्दुमति सुतार (बीदर), दत्ता मुळे (औरंगाबाद), विजयकुमार कानडे(निलंगा), अॅड.पांडुरंग खरे(लातूर), प्रा.डॉ.विठ्ठलराव जाधव (उमरगा),पं.सुधाकरजी शास्त्री(पुणे), ओमप्रकाश आर्य (लातूर), योगिराज भारती (परली),गुरुनाथ तुगांवकर(भालकी) आदियों ने भी विचार रखे तथा गुरुजी के प्रति सविनय शुभकामनाएं समर्पित की। लन्दन के शिष्य डॉ.तानाजी आचार्य का सन्देश चलभाषद्वारा सुनाया गया। सभा के भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंहजी चौहान ने गुरुजी पर विरचित ÷÷हो मुबारक जन्मदिन, तुम्हें गुरुजी× जिन्दगी में सदा मुस्कुराते रहो।'' यह गीत सुनाया।

सात ग्रन्थों का विमोचन –

इस अवसर पर मा.श्री वाघमारेजी एवं स्वामीजी(गुरुजी) के करकमलों से लगभग सात ग्रन्थों का विमोचन किया गया। सभाद्वारा आर्य समाज परली के सहयोग से वेदज्ञ डॉ.रघुवीरजी वेदालंकार लिखित **÷दयानन्द सूक्ति सुधा**' तथा प्रकाश्यमान **÷मराठी मनुस्मृति**' (अनुवादकर्ता–प्रा.गो.घ.मैन्दरकर) व **÷स्व.स्वामी संकल्पानन्दजी लघुग्रन्थमाला**' इन दो ग्रन्थों की पांडुलिपियों तथा डॉ.नयनकुमार आचार्य द्वारा लिखित शोधग्रन्थ **÷वेदों में मानवीय मूल्य**', सभा के मुखपत्र ÷वैदिक गर्जना' के **÷संस्कारस्तंभ**' (पू.हरिश्चंद्र गुरुजी गौरव विशेषांक) व **÷विश्वमित्र**' (स्व.पं.विश्वमित्रजी स्मृति विशेषांक) इन दो विशेषांकों का तथा लातूर समाचार साप्ताहिक के **÷श्रद्धानन्द विशेषांक**' का विमोचन सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ.श्री वाघमारेजी ने इन ग्रन्थों के लेखकों, सम्पादकों व प्रकाशकों का अभिनन्दन कर इनके उक्त ग्रन्थनिर्माण के सराहनीय कार्य की भूरि–भूरि प्रशंसा की। समारोह से पहले पं.सुधाकरजी शास्त्री के पौरोहित्य में ब्रहद्यज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसमें यजमान दम्पति उत्साह के साथ सम्मिलित हुए। यज्ञ के अन्त में पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी ने उपस्थितों को मार्गदर्शन किया। द्विदिवसीय

समारोह का संचालन डॉ.नयनकुमार आचार्य, प्रा.अरुण चौहान व लक्ष्मण आर्य ने किया।

जातिनिर्मूलन सम्मेलन एवं अन्य कार्यक्रम–

स्वामी श्रद्धानन्द (गुरुजी) जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में एक दिवस पूर्व दि.२८ अप्रैल को प्रात: ११ जे ÷÷जातिप्रथा निर्मूलन सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता आचार्य ब.श्री नन्दकिशोरजी ने की। इस सम्मेलन में सर्वश्री पं.प्रशान्तकुमारजी शास्त्री, डॉ.वीरेन्द्रजी शास्त्री, इन्दौर से पधारे पं.सुखदेवजी आर्य(सम्पादक, वैदिक संसार), पं.प्रियदत्तजी शास्त्री आदियों ने विचार रखे। आरम्भ में श्री विद्यासागर आरदवाड व पं.प्रतापसिंह चौहान ने भजन प्रस्तुत किये।

पं.प्रियदत्तजी ने कहा कि यदि आर्य समाज न होता, तो वेद प्रचार न होता और न ही सामाजिक परिवर्तन हेतु अन्तर्जातीय विवाह होते। आर्यजगत् में सर्वाधिक अंतर्जातीय विवाह महाराष्ट्र प्रान्त में हुए हैं। पं.सुखदेवजी ने बताया कि जातिप्रथा यह मानवता के लिए अभिशाप हैं। जाति के नाम पर आजकल न जाने कितने आन्दोलन हो रहे हैं, जो कि समाज को तोडने का षड्यंत्र है। अध्यक्षीय समापन करते हुए आचार्य नन्दकिशोरजी ने कहा, ÷÷महाराष्ट्र की वीरभूमि महान है। जातिप्रथा को हटाने में सर्वाधिक प्रेरक कार्य मराठवाडा में हुआ है, यह हमारे लिए गौरव का विषय है।

रात्रिकालीन सत्र में **÷आर्य समाज का प्रचार–प्रसार कैसे हो?'** इस विषयपर पं.सुधाकरजी शास्त्री, पं.प्रियदत्तजी शास्त्री व पं.लक्ष्मण आर्य गुरुजी आदियों ने विचार रखें। इन सभी ने कहा– ÷आज की बढती समस्याओं का स्थायी समाधान केवल आर्य समाज के पास ही है। इस संस्था का पुराना प्रेरक इतिहास वर्तमान के नवनिर्माण के उपयुक्त सिद्ध हो सकता है। आर्यजन अपनी मातृसंस्था के सिद्धान्तों की सुरक्षा व संवर्धन करते हुए प्रयत्नशील रहें।'

इस द्विदिवसीय समारोह में महाराष्ट्र व कर्नाटक के अनेक आर्यजन व गुरुजी के शिष्य पधारें थे। आर्य समाज परली के कार्यकर्त्ताओं ने तन–मन–धन से इस समारोह को सफल बनाने में बहुतही सराहनीय भूमिका निभाई। सर्वश्री रंगनाथजी तिवार, डॉ.वीरेन्द्र शास्त्री, प्रा.अरुण चव्हाण, जयपालजी लाहोटी, प्रशान्तकुमार शास्त्री, जयकिशोर दोडिया, गोवर्धन चाटे, देविदासराव कावरे, लक्ष्मणराव आर्य, विज्ञानमुनिजी, सोममुनिजी, अमृतमुनिजी, विजयप्रसाद अवस्थी आदियों ने इस समारोह को बहुत ही यशस्वी बनाया। ✻ ✻ ✻

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन सम्पन्न

सर्वसम्मति से पदाधिकारियों के चयन की गौरवशाली परम्परा का निर्वहन

योगमुनिजी प्रधान, राजेन्द्र दिवे मन्त्री, तथा राठौर कोषाध्यक्ष बनें।

अपनी अप्रतिम कार्यप्रणाली एवं विभिन्न गतिविधियों द्वारा आर्य विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने में अग्रणी प्रान्तीय आर्य संगठन ÷महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' का त्रैवार्षिक निर्वाचन अधिवेशन रविवार दि.२९ जुलाई को सभा के सम्पर्क कार्यालय परली-वैजनाथ स्थित स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम में उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ।

प्रसिद्ध अध्येता एवं भाषाविद् प्रो.ओमप्रकाशजी विद्यालंकार (होलीकर) की प्रमुख अध्यक्षता में आयोजित इस निर्वाचन अधिवेशन में सम्मिलित सभी लगभग ९० प्रतिनिधियों ने सभी प्रकार के दलगत राजनीतिक हथकण्डों को दरकिनार करते हुए तथा चुनाव(मतदान) प्रक्रिया को टालते हुए सर्वसम्मति से पदाधिकारियों का चयन करने की आदर्श गरिमामय परम्परा को जारी रखा। सभी कार्यकर्त्ताओं ने मिलकर अपने पदाधिकारियों का चयन करने के अधिकार ऐसे सम्माननीय वरिष्ठ अधिकारियों को प्रदान किये, जो कि पूर्णतया निष्पक्ष एवं भविष्य में पद ग्रहण न करनेवालों में से थे। स्वामी श्रद्धानन्दजी(गुरुजी), डॉ.ब्रह्ममुनिजी, माधवराव देशपाण्डे, प्रा.देवदत्त तुंगार तथा ओमप्रकाशजी पाराशर इन पांचों की गठित समिति ने विचारपूर्वक प्रखर सिद्धान्तनिष्ठ व समय देनेवाले कार्यकर्त्ताओं को पदाधिकारी के रूप में चयनित किया।

इसमें प्रधान के रूप में सभा के निवर्तमान उपप्रधान एवं धुलिया के वरिष्ठ कार्यकर्ता **श्री योगमुनिजी (रमेशजी घुंडियाल) नियुक्त किया गया तथा मन्त्रीपद पर निवर्तमान उपप्रधान व लातूर(रामनगर) के सक्रिय आर्य कार्यकर्ता श्री राजेन्द्रजी दिवे को चयनित किया गया। कोषाध्यक्षपद का भार फिर एकबार परली आर्य समाज के मन्त्री श्री उग्रसेनजी राठौर** पर सौंप दिया गया है।

साथ ही तीन उपप्रधान, तीन उपमन्त्री, पुस्तकाध्यक्ष, वेदप्रचार अधिष्ठाता व आर्य वीरदल अधिष्ठाता इन पदों की भी घोषणा की गयी। जैसे ही चयन समितिद्वारा उक्त नामों की घोषणा हुई, तब उपस्थित सभी प्रतिनिधियों ने तालियों से नये

पदाधिकारियों का स्वागत किया। पदाधिकारियों के चयोंन के पश्चात् इन सभी ने मिलकर सभा के अंतरंग सदस्यों व प्रतिष्ठित सदस्यों का निश्चय कर नयी कार्यकारिणी गठन की।

–० नये पदाधिकारी व कार्यकारिणी ०–

प्रधान – श्री योगमुनिजी(रमेशजी घुंडियाल)

उपप्रधान – श्री दयाराम बसैये, श्री आनन्दमुनिजी, श्री प्रमोदकुमारजी तिवारी

मन्त्री – श्री राजेन्द्रजी दिवे

उपमन्त्री– श्री लखमसीभाई वेलानी, श्री प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी, श्री शंकरराव बिराजदार

पुस्तकाध्यक्ष–श्री ज्ञानकुमार आर्य

वेदप्रचार अधिष्ठाता– पं.श्री सुधाकरजी शास्त्री

आर्यवीर दल अधिष्ठात– श्री व्यंकटेशजी हालिंगे

संरक्षक – स्वामी श्रद्धानन्दजी व डॉ.ब्रह्ममुनिजी

अन्तरंग सदस्य –

१) श्री प्राचार्य देवदत्त तुंगार(नांदेड), २) श्री प्रभाकरराव देशमुख(हदगांव), ३) श्री बालकिशनजी बिर्ला(परभणी), ४)श्री संतोषजी लदनिया (हिंगोली), ५)श्री रामचंद्रराव उन्हाळे (मुदखेड),६)श्री सुरेशजी चिंतावार(धर्माबाद), ७)श्री विजय उनग्रतवार (देगलूर), ८)श्री संतोष आर्य (जालना), ९)श्री अ‍ॅड.जोगेंद्रसिंह चौहान (औरंगाबाद),१०)श्री हरिप्रसादजी गुप्ता(मालेगांव), ११)श्री संतोषजी रहाणे (भगुर–नाशिक),१२) श्री माधवरावजी देशपांडे (पुणे), १३)श्री ओमप्रकाशजी पाराशर (लातूर), १४)श्री शंकरराव मोरे (लातूर), १५) श्री विजयकुमारजी कानडे,१६) श्री ओमप्रकाशजी वाघमारे (निलंगा), १७)श्री डॉ.प्रकाशजी कच्छवा(औराद श.),१८)श्री बभ्रुवाहनजी शिंदे (शिवणखेड), १९) श्री विजयकुमार बंग (उस्मानाबाद), २०)श्री श्रीधरराव कवडे (वाशी), २१) प्रा.डॉ.विठ्ठलरावजी जाधव(उमरगा), २२) श्री महाळप्पा दुधभाते (गुंजोटी), २३)श्री श्रीकृष्ण पाटील (औराद),२४)श्री किशनराव राऊत (अंबाजोगाई), २५)श्री अ‍ॅड.प्रमोदजी मिश्रा (धारुर), २६) श्री डॉ.नयनकुमार आचार्य(परली), २७)प्रा.डॉ.जयनारायणजी मुंदडा (अहमदनगर), २८)श्री चैतन्यजी रडे(जलगांव) २९) सौ.लीलावती जगदाळे (परभणी)।

–० प्रतिष्ठित सदस्य ०–	–० आजीवन सदस्य ०–
१) प्रा.ओमप्रकाशजी होळीकर	१) प्रा.वेदमुनी वेदालंकार
२) श्री सोममुनिजी	२) डॉ.हनुमानलु नामावाड
३) श्री नारायणरावजी कुलकर्णी	३) श्री विज्ञानमुनी वानप्रस्थी
४) श्री राजवीर कौशल्य शास्त्री	४) श्री विजयकुमार शेषराव वाघमारे

निवर्तमान प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी का चिन्तनपर प्रबोधन हुआ। अपने प्रभावोत्पादक भाषण में श्री मुनिजी ने महर्षि दयानन्द के क्रान्तिकारी जीवन के कुछ प्रसंगों को सामने रखा। आर्य समाज के प्रसार कार्य में महर्षि के अनुयायियों ने न जानें कितने कष्ट सहन किये? किसी भी प्रकार के प्रलोभन व पद की अभिलाषा न रखते हुए उन्होने ऋषि मिशन को आगे बढाया। असंख्य देशभक्तों ने नि:स्वार्थभाव से कार्य किया। हैदराबाद में आर्यों ने बलिदान दिया। अन्य मत-पन्थों व जाति व्यवस्था के साथ समझौता न करते हुए कट्टर आर्यसमाजी बनकर के रूप में उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनायी थी। समाज में आर्यों की एक समय प्रतिष्ठा थी, दुनिया का उनपर भरोसा था। लेकिन दुर्भाग्य से आज हम आर्यों ने अपने विश्वा को खो दिया है। आज सारे विश्व को वेदज्ञान व आर्य समाज के विचारों की आवश्यकता है, तब यदि हम केवल पदप्रतिष्ठा के लिए दौडधूप करते रहेंगें तो हममें व अन्य भ्रष्ट राजनीति करनेवाले तथाकथित राजनेताओं में क्या अन्तर रहेगा?''इस प्रेरक विचारों को सुनकर सभी प्रतिनिधि प्रभावित हो गये।

सर्वानुमति से निर्विरोध चयन के पश्चात नये पदाधिकारियों ने आर्यजनों को आश्वस्त किया कि ऋषि दयानन्द के वैदिक मन्तकों का जन-जन तक पहुंचाने के लिए वे अहर्निश प्रयत्न करते रहेंगें। आर्य समाज का **÷कृण्वन्तोंविश्वमार्यम्'** यह उद्घोष साकार करने हेतु वे तन-मन-धन से, समय देकर पूरी लगन के साथ आगे बढेंगें। पू.श्रद्धानन्दजी डॉ.ब्रह्ममुनिजी ने जिस आन्तरिक वेदना के साथ इस संगठन को आगे बढाया, उसी परम्परा का हम सभी निर्वहण करते रहेंगें।

अन्त में आर्यसमाज परलीद्वारा नवनिर्वाचित सभा पदाधिकारियों का स्वागत व अभिनन्दन किया गया। पूर्व प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी व पूर्वमन्त्री श्री देशपाण्डे ने अपना कार्यभार नयी कार्यकारिणी को सौपा और भविष्यकालीन कार्यों की सफलता के लिए शुभकामनाएं वितरीत की। ***

युवा विद्वान् सत्येन्द्रार्य परली गुरुकुल के ÷आचार्य' बनें।

नये ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ व उपनयन संस्कार

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभान्तर्गत आर्य समाज, परली-वैजनाथ द्वारा संचालित स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम विद्यालय के प्रधानाचार्य के रूप में कर्मठ युवा विद्वान् श्री सत्येन्द्रजी विद्योपासक को नियुक्त किया गया है। आचार्य बलदेवजी के प्रिय शिष्यों में से एक माने जानेवाले ऐसे युवा वैद्रिक विद्वान को गुरुकुल परली का आचार्य बनाने से महाराष्ट्र के गुरुकुलप्रेमी आर्य सज्जनों में उत्साह का वातावरण छा गया है ।

गत ३ - ४ वर्षों से योग्यतम आचार्य के अभाव से गुरुकुल में अध्यायन-अध्यापन का कार्य शिथिल हो गया था। अब नये आचार्य के नियुक्त होने से गुरुकुल पुनःश्च क्रियान्वित हो गया है।

इसी जून माह में लगभग २० ब्रह्मचारियों का प्रवेश हुआ व विद्याध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया उत्तम ढंग से प्रारंभ हो गयी है। दि.८ जुलाई को नवागत ब्रह्मचारियों का विधिवत् उपनयन तथा वेदारम्भ संस्कार कराया गया। इस अवसर पर पं.राजवीरजी शास्त्री व अन्य विद्वान उपस्थित थे।

आचार्यजी का परिचय -

आचार्य श्री सत्येन्द्रजी विद्योपासक महाराष्ट्र के साताळा(ता.अहमदपूर जि.लातूर)के निवासी हैं। वे दिवंगत स्वा.सै.पं.भीमसेनजी आर्य चाकुरकर के दौहित्र एवं परोपकारिणी सभा अजमेर के यशस्वी पूर्व प्रधान व दिवंगत कर्मठ विद्वान् प्रो.धर्मवीरजी के भांजे तथा निलंगा के आर्य कार्यकर्त्ता श्री ओमप्रकाशजी पाखरसांगवे के दामाद हैं।

आरम्भिक पढाई के पश्चात् आप गुरुकुल आबूपर्वत (राजस्थान) में प्रविष्ट हुये। वहाँ पर शास्त्री तक की पढाई की। तत्पश्चात् गुरुकुल कालवा में आर्यजगत् के वीतराग तपस्वी संन्यासी स्व.आचार्य बलदेवजी व आचार्य राजेन्द्रजी के सान्निध्य में रहकर संस्कृत, व्याकरण, काशिका महाभाष्य, निरुक्त, छन्द आदि का अध्ययन किया। गुरुकुल रेवली में आचार्य प्रदीपजी के पास रहकर भी आपने अध्ययन किया। तथा रोजड में रहकर पाँच दर्शनों का ज्ञान अधिगत किया।

अब आपने गुरुकुल परली के प्रधानाचार्य का कार्यभार स्वीकार कर, वैदिक शिक्षा प्रणाली को आगे बढाने का शुभसंकल्प किया है। आचार्यजी का आर्यजनों की ओर से अभिनन्दन व गुरुकुल संचालन के लिए शुभकामनायें×

आचार्य सुभाषचन्द्रजी का निधन

वेदश्री गुरुकुल महाविद्यालय, येडसी (ता.जि.उस्मानाबाद) के आचार्य श्री सुभाषचन्द्रजी का गत दि.२५ अप्रैल २०१८ को अल्पकालीन रुग्णावस्था से दु:खद निधन हुआ। वे ६७ वर्ष के थे। कुछ वर्षों से वे बिमार चल रहे थे। मूल के भारज ता.अंबाजोगाई के निवासी श्री सुभाषचन्द्रजी की महाविद्यालयीन शिक्षा अम्बाजोगाई में हुई। इसी छात्रावस्था में वे विद्यार्थियों के जीवननिर्माता पू.हरिश्चंद्रजी गुरुजी (स्वामी श्रद्धानन्दजी) के सान्निध्य में आये। उन्हीं की प्रेरणा से वेद, संस्कृत, व्याकरण पढने हेतु वे दयानन्द मठ दीनानगर(पंजाब) चले गये। वहां पर स्वामी सर्वानन्दजी निर्देशन में गुरुकुलीय शिक्षा प्राप्त की। वेदाध्ययन के पश्चात् वे नान्देड के वैदिक सेवाश्रम में आचार्य के रुप में कार्य करने लगे। तत्पश्चात् पू.हरिश्चन्द्र गुरुजी व डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनिजी) के परामर्श व आग्रह से वे महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की येडसी स्थित भूमि पर स्थापित वेदश्री गुरुकुल के आचार्य बन गये। उनके आचार्यत्व में अनेकों शिष्य संस्कृत पढकर विभिन्न स्थानों पर शिक्षक, प्राध्यापक, पुरोहित विद्वान बन गये। गुरुकुल निर्माण कार्य में उन्हें पू.गुरुजी, डॉ.सु.ब.काले(डॉ.ब्रह्ममुनि), स्व.बिरदीचन्दजी कुचेरिया, स्व.रामपाल लोहिया, डॉ.हरिश्चन्द्र वंगे, सोममुनिजी(बार्शी) आदि आर्य कार्यकर्ताओं का भरसक योगदान प्राप्त हुआ था।

आचार्यजी के पार्थिव पर दूसरे दिन दोपहर ३ बजे गुरुकुल भूमि येडसी में अन्तिम संस्कार किये गये।

विश्वजित वेदपाठक का आकस्मिक निधन

आर्य समाज रामनगर(लातूर) के वरिष्ठ सदस्य तथा साप्ताहिक लातूर समाचार के सम्पादक श्री दयानन्दजी जडे के भांजे विश्वजितजी सुधाकरराव वेदपाठक का दि.१८ मई को सर्पदंश से आकस्मिक निधन हो गया। उनकी आयु ३७ वर्ष की थी। सामाजिक एवं पत्रिकारिता क्षेत्र में उनका योगदान रहा है। सर्पमित्र के रूप में भी उनकी पहचान थी। उनपर वैजनाथराव हालिंगे के पौरोहित्य में वैदिक पद्धति से अन्तिम संस्कार किये गये।

दोनों दिवंगत आत्माओं को प्रान्तीय सभा व आर्यसमाजों की भावपूर्ण श्रद्धान्जलि×

अन्य भी आर्य कार्यकर्त्ता दिवंगत हुए है, उनके समाचार अगले अंक में....

।।ओ३म्।।

माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।। (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद संदेश आत्मज्ञानी दुर्लभच...×

यस्तु विज्ञानवान् भवति युक्तेन मनसा सदा।
तस्येन्द्रियाणि वश्यानि सदश्वा इव सारथेः।। (कठोपनिषद–३/६)

खरे तर जो मनुष्य निश्चयात्मक यथार्थ ज्ञानाने परिपूर्ण असतो आणि तसेच नेहमी मनाने स्थिर आणि ज्ञानाच्या संगतीत असतो, त्याची इंद्रिये जसे एखाद्या सारथ्याकरिता बलशाली कार्यतत्पर असलेल्या घोड्याप्रमाणे वशीभूत होत असतात.

दयानंद वाणी परमेश्वराची अद्‌भुत सृष्टी रचना

पाहा× या शरीरामध्ये परमेश्वराने सृष्टीची अशी कांही ज्ञानपूर्वक रचना केली आहे की, जी पाहून विद्वान लोक आश्चर्यचकित होतात. शरीरात हाडांचे साधे, नाड्यांची (शिरांची) बांधणी, त्यावर मांसाचे लेपन व चामडीचे झाकण, प्लीहा, यकृत, फुफ्फुसे, हृदय व पंख्याची कलापूर्ण योजना, रक्ताचे शुद्धीकरण व प्रचालन, विद्युत (ऊर्जा) निर्मिती, जीवाचे संयोजन, डोक्यातील मेंदूची अद्‌भुत रचना, अंगावरील केस व नखे यांची उत्पत्ती, डोळ्यातील अत्यंत सूक्ष्म रक्तवाहिन्यांची तारांसारखी केलेली गुंफण, इंद्रियाच्या मार्गाने निश्चितीकरण, जीवाच्या जागृत, स्वप्न व सुषुप्ती या अवस्था आणि त्यांच्या अनुभवासाठी विशिष्ट स्थानांची निर्मिती, सर्व धातूचे वर्गीकरण, कला–कौशल्याची स्थापना इत्यादींनी युक्त अद्‌भुत सृष्टी परमेश्वराखेरीज कोण बनवू शकेल?

याशिवाय नाना प्रकारची रत्ने व धातू यांनी जडविलेली भूमी, विविध प्रकारच्या वटवृक्षादिकांच्या बीजांमधील अत्यंत सूक्ष्म रचना, असंख्य हरित, श्वेत, पीत, कृष्ण, वर्णयुक्त व चित्रविचित्र पाने, पुष्पे, फळे, मुळे यांची निर्मिती, गोड, खारट, तिखट, कडू, आंबट, तुरट वगैरे विविध रस, सुगंधी पाने, फुले, फळे, अन्न, कंदमुळे इत्यादींची रचना, अनेकानेक कोट्यवधी भूगोल, सूर्य, चंद्र इत्यादी लोकांची निर्मिती, ते धारण करणे, चालविणे, त्यांच्यावर नियंत्रण ठेवणे या साऱ्या गोष्टी परमेश्वराखेरीज कोणीही करू शकणार नाही. (सत्यार्थप्रकाश–आठवा समुल्लास)

श्रावणी पर्वाचे यथार्थ स्वरूप

– पं.राजवीर विद्यावाचस्पति

वैदिक संस्कृतीत श्रावण महिना हा सणांचा राजा आहे. या महिन्यात श्रावणी उपाकर्म, राखी पौर्णिमा, नागपंचमी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, पोळा तसेच बौद्धांचा वर्षावास व जैनांचे पर्युषणपर्व अशा लहान-मोठ्या सणांची झुंबड असते. उपाकर्म पर्वामुळे वैदिक धर्मियांसाठी तर हा अधिकच महत्त्वाचा आहे तो फक्त उपाकर्म पर्व म्हणूनच× गृह्यसूत्रांनुसार या सणाचा संबंध वेदस्वाध्यायाशीच आहे. उपाकर्म म्हणजे उद्घाटन, शुभारंभ× यजुर्वेदी लोकांनी श्रवणयुक्त पौर्णिमेदिवशी'', ऋग्वेदी लोकांनी नागपंचमी दिवशी, सामवेदी लोकांनी भाद्रपदातील हस्तनक्षत्राच्या दिवशी नूतन यज्ञोपवीत(जाणवी) धारण करून यज्ञविधिपूर्वक वेद स्वाध्यायाला प्रारंभ करावा असे विधान आहे. ऋग्वेदी, यजुर्वेदी किंवा ब्राह्मण, क्षत्रिय असे गट तट न पाळता आर्य समाजाच्या वतीने श्रावणी पौर्णिमेच्या दिवशी सर्वजण मिळून एकत्रितपणे उपाकर्म विधी संपन्न केला जातो. श्रवण नक्षत्र, श्रावण महिना आणि त्यात श्रुतींचे स्वाध्याय× यात एक सुंदर रंग संगती आहे. शिवाय पावसाळ्याचा काळ म्हटले की बेडकांची ओरड, ढगांचा कडकडाट हा आलाच. पुन्हा भर म्हणून त्यात ब्राह्मणांचा वेदपाठ, म्हणजे परापश्यन्ती, मध्यमा व वैखरी वाणीचा जणू संगमच× यामुळे हा श्रावण महिना उल्हासमय बनतो.

उपाकर्म(उपाकरण) विधी व उपनयन विधी यात बराच फरक आहे. तरीही या उपाकर्माला वार्षिक ÷उपनयन संस्कार' म्हणणे योग्य आहे. कारण या दोन्हींचा उद्देश्य मात्र एकच आहे, तो म्हणजे वेदाध्ययन× शिवाय वैदिक धर्माचे रक्षण, वैदिक संस्कृतीचे जतन, नव्या पिढीची जडण-घडण, तसेच परिवार, समाज व राष्ट्राचे भरण पोषण हे या आनुषंगाने आलेच× उपाकरण व उपनयन या दोन शब्दातील ÷उप' या उपसर्गाचा अर्थ आहे. ÷जवळ' आणि आकरण व नयन शब्दांचा अर्थ आहे ÷घेऊन जाणे'. दोन्हींचा अर्थ मिळवला तर ÷जवळ घेऊन जाणे' असे वाक्य बनते. परंतू यातून पूर्ण बोध होत नाही. प्रश्न असा पडतो की कोणाला कोणाजवळ घेऊन जायचे? याचे उत्तर आहे - ÷ब्रह्मचाऱ्यांना गुरुकुलात आचार्याजवळ घेऊन जायचे. गृहस्थी वानप्रस्थी व संन्याशांना वेदस्वाध्याय व सत्संगाकडे घेऊन जाणे. सामान्य लोकांना

यज्ञ(श्रेष्ठतम)कर्माकडे वळविणे आणि आत्म्याला ईश्वर प्राणिधनाकडे घेऊन जाणे.

स्नातक जेंव्हा विद्याभ्यास पूर्ण करून पितृकुलात जायला निघतात, त्यावेळी आयोजित समावर्तन संस्कार(निरोप समारंभ) कार्यक्रमात आचार्य आपल्या शिष्यांना ÷सत्यंवद। धर्मचर। स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां मा प्रमद:' असे आवर्जुन बजावतात. कारण आळस व प्रमाद या शत्रूंच्या गोजिरवाण्या रूपावर माणूस सहसा भाळतो आणि तो आपले कर्तव्य कर्म बेमालुमपणे विसरतो. ही संभावना ओळखूनच आपल्या ऋषी मुनींनी वेळोवेळी अशा पर्व-सणांची योजना करून सावधान करण्याचा प्रयत्न केलेला आहे. गुरुकुलातील उपाधी मिळवली की पुन्हा वेदवाचनाची व ऐकण्याची गरज नाही असे मानणे अत्यंत भ्रामक आहे. ब्रह्मज्ञान झाले, तरीही श्रवण-मनन व निदिध्यासन ही साधनत्रयी अखंडपणे चाललीच पाहिजे. म्हणूनच 'स्वाध्याय प्रवचनाचे कामी प्रमाद करू नका' असे आचार्यानी बजावले आहे. धर्मशास्त्रांचाही असाच आदेश आहे. संत वचन ही अशीच पुष्टी करते-

सेविलेचि सेवावे अन्न।
घेतलेचि घ्यावे जीवन(पाणी)।।
श्रवण आणि मनन। केलेचि करावे।।

कालच्या दिवशी आपण अन्न व पाणी घेतलो होतो, यापुढे त्याची कांही गरज नाही असे आपण म्हणत नाही. अन्न व पाणी दररोज व नियमपूर्वक घ्यावे लागते. अगदी तसेच वेदस्वाध्यायाचे आहे. ÷अनभ्यासे विषं विद्या' असे जे म्हणतात ते खोटे नाही. स्वाध्यायहीनता हा अक्षम्य अपराध आहे. कारण त्यामुळे परिवार, समाज व राष्ट्रातून शील, व्रत व चारित्र्याचा ऱ्हास होतो. या तीन गोष्टी संपुष्टात आल्या, तर जगात जगण्यासारखे शिल्लक राहतेच काय ?

खरोखरच आज आपण सुरक्षित आहोत का? खऱ्या अर्थाने आपण शरीराने निरोगी आहोत का ? मनाने तणावरहित, भयरहित आहोत का? याचे उत्तर कदापी नाही, असेच मिळेल. आत्मा आनंदी आहे का? खरे तर आजची व्यक्ती परिवार, समाज व राष्ट्राची दुर्दशा संपवायची असेल वेदज्ञानाचीच खरी गरज आहे. आज श्रद्धेचे प्रदर्शन नव्हे, तर सत्यज्ञानाचे दर्शन हवे आहे आणि हे सर्व घडते स्वाध्याय व श्रवणाने× म्हणूनच संत म्हणतात -

श्रवण आणि मनन। निजध्यासे समाधान ।
मिथ्या कल्पनेचे भ्रम। उडोनि जाय ।।

सद्ग्रंथ हेच खरे चिंतामणी होत. त्यांच्या चिंतनाने सर्व चिंता नाहीशा होतात. म्हणूनच संत ज्ञानेश्वर म्हणतात -

सर्व सुख गोडी। सर्वशास्त्र निवडी।।
रीकामा अर्ध घडी । राहू नको ।।

लोकमान्य बाल गंगाधर टिळक म्हणतात - ÷मी नरकात सुद्धा चांगल्या पुस्तकांचे स्वागत करीन× कारण ग्रंथामध्ये नरकालाही स्वर्ग बनविण्याची शक्त असते. ग्रंथातील शब्दां-शब्दांमध्ये जीवनाचा अर्थ साविलेला असतो. तेंव्हा अंगावर फाटका शर्ट असला तरीही हरकत नाही. पण सद्ग्रंथ खरेदी करतांना पैशांचा विचार करू नका. **÷सुशिक्षितांच्या घरी सद्ग्रंथ नसणे म्हणजे सुवासिनींच्या कपाळावर कुंकू नसल्यासारखे आहे.'** हे साहित्यिकांचे विचार निश्चितच प्रेरणादायी आहेत.

भारतरत्न डॉ.भीमराव आंबेडकर व अब्राहम लिंकनचा इतिहास पहा× ते वाचनाच्या बळावर आपल्या भोवतालच्या प्रतिकूल परिस्थितीवर मात करून उच्च पदावर पोहोचले. महान झाले. स्वाध्यायामुळेच स्वामी श्रद्धानंदजी, स्वामी सर्वानंदजी, पं.रामप्रसाद बिस्मील यांच्या जीवनाला प्रकाशाची दिशा मिळाली. हुतात्मा भगतसिंह, वीर सावरकर इत्यादी क्रांतिकारकांना स्वाध्यायातून क्रांतीची प्रेरणा मिळाली. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम आणि योगीराज श्रीकृष्ण ह्यांनी ऋषींच्या आश्रमात राहून वेदाध्ययन केले होते. महर्षि दयानंदांनी एके ठिकाणी लिहिले आहे - ÷मी माझ्या निश्चय व परीक्षणावरून ऋग्वेदापासून ते पूर्व मीमांसापर्यंत अनुमानतः तीन हजार ग्रंथांना जवळजवळ प्रामाणिक मानतो.' यावरून त्यांचे ग्रंथवाचन किती दांगडे होते याची कल्पना येते. जे जे थोर पुरुष झाले अथवा आहेत त्यांच्या थोरवीचे गमक त्यांच्या स्वाध्यायशीलतेतच आहे.

वेद या शब्दाचा एक अर्थ होतो लाभः याची सार्थकता पुढील मंत्रावरून पटते-

स्तुता मया वरदावेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् ।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसं मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।।

यात असे म्हंटले आहे - ÷उत्तमोत्तम वरदानांना देणारी वरदा वेदमाता ही ईश्वर प्रदत्त असून तीचे रसास्वादन करणाऱ्यांचे जीवन पवित्र होते व तो द्विजत्वास प्राप्त होतो. वेदानुसार आचरण करण्याने दीर्घायुष्य, प्राणशक्ती, सुसंतान, पशुधन, कीर्ती, संपत्ती व ब्रह्मतेजाची उपलब्धी होते. एवढेच नव्हे तर ब्रह्मलोकही प्राप्त होतो. मुक्तीही मिळते. एकंदरीत वेदस्वाध्यायाने इहलौकिक व पारलौकिक सुखाची प्राप्ती होते.

वेदाध्ययनाचे आभाळभर फायदे आहेत. पण लोक त्याकडे वळत नाहीत. कारण त्यासाठी योग्य ते श्रम घ्यावे लागतात. कठोर तप करावे लागते. कोणीतरी

स्वाध्यायाला श्रमाची पराकाष्ठा म्हटले आहे. पाली भाषेत श्रवण शब्दाचा अर्थ ÷श्रम’ आहे. उचित श्रमाचेच नाव आहे तप दुर्दैवाने लोकांना मात्र आज अचूक प्रयत्न किंवा तप करणे आवडत नाही. महर्षी दयानंदांनी वेदाध्यायनाला परमधर्म म्हटले आहे. परमधर्म म्हणजे परमकर्तव्य. वेदाध्ययन रूपी श्रमानेच चार ही आश्रमाला सार्थकता प्राप्त होते. स्वाध्याय धर्माचे पालन न केल्यामुळे आज चार आश्रमांपैकी दोन आश्रम जवळ-जवळ बंदच पडले आहेत. आहेत त्या दोन आश्रमात ही कांही दाम उरला नाही अशी स्थिती बदलायची असेल तर श्रावणी पौर्णिमे दिवशी विधिवत वेदस्वाध्यायाला प्रारंभ करावी आणि ती श्रृंखलापुढे किमान चार साडेचार महिने तरी नियमित चालू ठेवावी. चातुर्मास हा वास्तविक पाहता ज्ञानसाधनेचाच कालावधी आहे हे लक्षात ठेवावे आणि या सणाच्या मूलभूत उद्देशाशी पाईक राहावे. व्रताची जोपासणा ही घरातच करावयास हवी. ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ व बलिवैश्वदेवयज्ञ या पाच महायज्ञ करण्याचे व्रत करा.

सोळा संस्कारांना महत्त्व द्या. सणा-वारांना वैदिक रीतिने संपन्न करा. यानेच वैदिक धर्माचे, वैदिक संस्कृतीचे रक्षण शक्य आहे. धर्म आणि संस्कृतीच्या रक्षणातच आपले रक्षण समावले आहे. म्हणूनच **÷धर्मो रक्षति रक्षित:।**’ असे म्हटले आहे. आपण अधर्म करायचे असते. अधर्माचे नव्हे, तेंव्हा श्रावणी पौर्णिमेला राखी न बांधता-यज्ञोपवीत धारण करा. कारण यज्ञोपवीतामध्ये जो अर्थ भावलेला आहे, तेवढा अर्थ राखीमध्ये भरलेला नाही. राखी तात्पुरती आहे. यज्ञोपवीतामध्ये सततची जाणीव आहे. कदाचित हा विचार आपल्याला पटणार नाही. आणि वठलाच तर तो पटणार नाही. असे असले तरी बहीण भावाच्या हाती राखी बांधणार आहे. पण या वर्षीपासून बहिनींनी एवढे तरी करावे की भावांकडून तुच्छ वस्तुंची अथवा रुपयांची भेट न घेता हवनकुंड अथवा वेदादी ग्रंथाची मागणी करावी आणि भावांकडून आपल्या रक्षणासोबतच वेद व वैदिक धर्म संस्कृतीच्या रक्षणाची ही मागणी करावी, यातच श्रावणी उपाकर्म व पर्वाची सार्थकता आहे.

राखी का त्यौहार है आया
बांधलो, बांधकर रक्षाबंधन।
बदले में मैं मांगती उपहार भैय्या
करो वेद का रक्षण, करो धर्म का रक्षण।।

- आर्य समाज, सोलापुर

सेठ बलदवा मार्ग, कस्तुरबा मार्केट, बुधवार
पेठ, सोलापुर, मो.९८२२९९००११

||ओ३म्||

स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां मा प्रमदितव्यम् ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्य समाज, परली-वैजनाथ जि.बीड

मानवमात्र की सुख-शांति एवं सर्वंकश विकास हेतु वेद प्रचार का व्यापक उपक्रम

मानव जीवन कल्याण वेदज्ञान प्रचार अभियान - २०१८

(श्रावणी उपाकर्म पर्व-वेद प्रचार माह)

दि.१२ अगस्त से ९ सितम्बर २०१८

◆◆◆ राज्यस्तरीय कार्यक्रम ◆◆◆

विद्वानों के नाम	आर्य समाजें	श्रावणी कार्यक्रम
आचार्य पं.रामचन्द्रजी	आर्य समाज, **वारजे मालवाडी, पुणे**	१२ से १६ अगस्त २०१८
शास्त्री	आर्य समाज, **नानापेठ, पुणे**	१७ से १९ अगस्त २०१८
(वैदिक विद्वान)सोनीपत	आर्य समाज, **पिंपरी, पुणे**	२० से २६ अगस्त २०१८
(हरियाणा) एवं	आर्य समाज, **देवलाली कैम्प,नाशिक**	२७, २८ अगस्त २०१८
पं.सुखपालजी आर्य	आर्य समाज, **भगूर, नाशिक**	२९,३०,३१ अगस्त २०१८
(आर्य भजनोपदेशक)	आर्य समाज, **पंचवटी, नाशिक**	१, २ सितम्बर २०१८
देहरी, सहारनपुर(उ.प्र)	आर्य समाज, **धुलिया**	३ से ९ सितम्बर २०१८
पं.चन्द्रपालजी शास्त्री	आर्य समाज, **सम्भाजीनगर**(औ.बाद)	१२, १३ अगस्त २०१८
(वैदिक विद्वान)	आर्य समाज, **गारखेडा, औ.बाद**	१४ से १६ अगस्त २०१८
गाजियाबाद(उ.प्र.) एवं	आर्य समाज, **सेलू जि.परभणी**	१७ से १९ अगस्त २०१८
पं.रामकुमारजी आर्य	आर्य समाज,परली-वै. जि.बीड	२० से २६ अगस्त २०१८
(आर्यभजनोपदेशक)	आर्य समाज, गांधी चौक, **लातूर**	२७ अगस्त से २ सितंबर १८
टोकस-हिसार(हरि.)	आर्य समाज, **सोलापुर**	३ से ९ सितंबर २०१८
पं.ब्रिजेशजी शास्त्री	आर्य समाज, **जालना**	१२, १३ अगस्त २०१८
(वैदिक विद्वान)	आर्य समाज, **परभणी**	१४ से १८ अगस्त २०१८
हाथरस(उ.प्र.)	आर्य समाज, **नांदेड**	१९, २० अगस्त २०१८
एवं	आर्य समाज, **देगलुर**	२१ से २७ अगस्त २०१८
पं.ऋषिपालजी ÷पथिक'	आर्य समाज, **शहापुर ता.देगलूर**	२८, २९ अगस्त २०१८
(आर्य भजनोपदेशक)	आर्य समाज, **मुदखेड**	३०अगस्त से २ सितम्बर १८
सहारनपुर	आर्य समाज, **धर्माबाद**	३ से ९ सितम्बर २०१८

विद्वानों के नाम	आर्य समाजें	श्रावणी कार्यक्रम
आचार्य पं.आजादमुनिजी	आर्य समाज, **रामनगर, लातूर**	१२ से १८ अगस्त २०१८
(वैदिक विद्वान) हिसार	आर्य समाज, **भक्तिनगर, लातूर**	१९, २० अगस्त २०१८
(हरियाणा) एवं	आर्य समाज, **शिवणखेड ता.चाकुर**	२१ से २५ अगस्त २०१८
पं.कर्मवीरजी आर्य	आर्य समाज, **रेणापुर**	२६ से ३० अगस्त २०१८
(आर्य भजनोपदेशक)	आर्य समाज, **किल्लेधारुर**	३१अगस्त से ६ सितम्बर १८
मुजफ्फरनगर	आर्य समाज, **अंजनडोह**	७ सितम्बर २०१८
	आर्य समाज, **अंबाजोगाई**	८, ९ सितम्बर २०१८
पं.आचार्य भूदेवजी शास्त्री	आर्य समाज, **उमरगा**	१२ से १४ अगस्त २०१८
(वैदिक विद्वान)दिल्ली एवं	आर्य समाज, **औराद-गुंजोटी**	१५ से १७ अगस्त २०१८
पं.राजवीरसिंह आर्य	आर्य समाज, **गुंजोटी**	१८ से २१ अगस्त २०१८
(आर्य भजनोपदेशक)	आर्य समाज, **निलंगा**	२२ से २६ अगस्त २०१८
मतौली-देवबन्द (उ.प्र.)	आर्य समाज, **औराद शहाजानी**	२७अगस्त से २ सितम्बर १८
	आर्य समाज, **उदगीर**	३ से ९ सितम्बर २०१८
प्रो.विमलकुमारजी आर्य	आर्य समाज, **हिंगोली**	११, १२, १३ अगस्त २०१८
(वैदिक विद्वान)हरदोई(उ.प्र.)	आर्य समाज, **आखाडा बाळापुर**	१४, १५ अगस्त २०१८
एवं	आर्य समाज, **घोडा ता.कळमनुरी**	१६ अगस्त २०१८
पं.सन्दीपजी वैदिक	आर्य समाज, **जरोडा ता.कळमनुरी**	१७ अगस्त २०१८
(आर्यभजनोपदेशक) सहारनपुर	आर्य समाज, **येहळगांव ता.हदगांव**	१८, १९ अगस्त २०१८
पं.बाबुराव काळे (गुरुजी)	आर्य समाज, **मरडगा ता.हदगाव**	२० अगस्त २०१८
येहळेगांव	आर्य समाज, **भाटेगांव ता.हदगाव**	२१, २२ अगस्त २०१८
(कांही गावांकरिता)	आर्य समाज, **तळणी ता.हदगाव**	२३ से २५ अगस्त २०१८
	आर्य समाज, **शिऊर ता.हदगाव**	२६ अगस्त २०१८
	आर्य समाज, **निवघा ता.हदगाव**	२७ से २९ अगस्त २०१८
	आर्य समाज, **हदगांव ता.हदगाव**	३० अगस्त से ५ सित.२०१८
	आर्य समाज, **कंजारा ता.हदगाव**	६ सितम्बर २०१८
	आर्य समाज, **तामसा ता.हदगाव**	८ सितम्बर २०१८
पं.राजवीरजी शास्त्री	आर्य समाज, **लोहारा ता.उदगीर**	१२ से १४ अगस्त २०१८
(वैदिक विद्वान)सोलापुर एवं	आर्य समाज, **करडखेल ता.उदगीर**	१५ से १७ अगस्त २०१८
पं.सोगाजी घुन्नर	आर्य समाज, **गांजुर ता.चाकुर**	१८ अगस्त २०१८
(आर्यभजनोपदेशक) हदगांव	आर्य समाज, **सुगाव ता.चाकुर**	१९ अगस्त २०१८

विद्वानों के नाम	आर्य समाजें	श्रावणी कार्यक्रम
पं.सुधाकरजी शास्त्री	आर्य समाज, **हाळी ता.उदगीर**	२१ से २३ अगस्त २०१८
(वैदिक विद्वान)पुणे,	आर्य समाज, **साकोळ ता.शिरुर अ.**	२४ से २६ अगस्त २०१८
एवं	आर्य समाज,**अजनी ता.शि.अनंतपाळ**	२७ से २९ अगस्त २०१८
पं.सोगाजी घुन्नर	आर्य समाज, **बिबराळ**	३०, ३१ अगस्त २०१८
(आर्य भजनोपदेशक)हदगांव	आर्य समाज, **उजेड**	१ सितम्बर २०१८
पं.सुधाकरजी शास्त्री	आर्य समाज, **ओम सोसायटी,पुणे**	५ सितम्बर २०१८
(वैदिक विद्वान)पुणे,	आर्य समाज, **खडकी**	६ सितम्बर २०१८
श्री माधवरावजी देशपांडे,पुणे,	आर्य समाज, **खडकवासला**	७ सितम्बर २०१८
श्री दयानन्द शिंदे पुणे	आर्य समाज, **मंचर**	८ सितम्बर २०१८
	आर्य समाज, **चिंचवड**	९ सितम्बर २०१८
	आर्य समाज, **आळंदी**	१० सितम्बर २०१८
पं.श्रीरामजी आर्य	आर्य समाज, **धाराशिव(उस्मानाबाद)**	१२, १३ अगस्त २०१८
(वैदिक विद्वान) लातूर	आर्य समाज, **तेरखेडा ता.जि.उ.बाद**	१४ अगस्त २०१८
एवं	आर्य समाज, **कळंब**	१५, १६ अगस्त २०१८
पं.प्रतापसिंहजी चौहान	आर्य समाज, **वाशी**	१७ से १९ अगस्त २०१८
(आर्यभजनोपदेशक) उदगीर	आर्य समाज, **ईट ता.वाशी**	२० अगस्त २०१८
	आर्य समाज, **घाटपिंपरी ता.वाशी**	२१, २२ अगस्त २०१८
	आर्य समाज, **टाका ता.औसा**	२३,२४ अगस्त २०१८
	आर्य समाज, **बेलकुंड ता.औसा**	२५ अगस्त २०१८
	आर्य समाज, **रामेगांव ता.औसा**	२६, २७ अगस्त २०१८
	आर्य समाज, **मोगरगा ता.औसा**	२८, २९, ३० अगस्त २०१८
	आर्य समाज, **मंगरुळ ता.औसा**	३१अगस्त से १ सितम्बर १८
	आर्य समाज, **धनेगांव ता.उदगीर**	२, ३ सितम्बर २०१८
	आर्य समाज, **वलांडी ता.देवळी**	४, ५ सितम्बर २०१८
	आर्य समाज, **टाकळी ता.उदगीर**	६, ७ सितम्बर २०१८
	आर्य समाज, **दैठणा ता.शि.अनंतपाळ**	८ सितम्बर २०१८
पं.संतोष आर्य	आर्य समाज, **भुसावल जि.जलगांव**	२१ अगस्त २०१८
(भजनोपदेशक)जालना	आर्य समाज,**नशिराबाद ता.जि.जलगांव**	२२ अगस्त २०१८
पं.चैतन्य रडे	आर्य समाज,**इदगांव ता.जि.जलगांव**	२३ अगस्त २०१८
(भजनोपदेशक)नशिराबाद		

विद्वानों के नाम	आर्य समाजें	श्रावणी कार्यक्रम
पं.अखिलेशजी शर्मा **पू.योगमुनिजी** (वैदिक विद्वान) धुळे	आर्य समाज, **मंजुषा कॉलनी,जलगांव**	११, १२ अगस्त २०१८
पं.सदाशिवराव जगताप (वैदिक विद्वान)वाशी एवं **पं.आर्यमुनिजी** (आर्य भजनोपदेशक)हदगांव	आर्य समाज, **गिरवली ता.वाशी** आर्य समाज, **चांदवड ता.वाशी** आर्य समाज,**अंजनसोंडा ता.परंडा** आर्य समाज, **मानेवाडी ता.जि.बीड**	२१ अगस्त २०१८ २२ अगस्त २०१८ २३ अगस्त २०१८ २४ अगस्त २०१८
डॉ.प्रकाशजी कच्छवा, औराद(शा.) **पं.शिवाजी निकम**, मोगरगा	आर्य समाज, **हलगरा** आर्य समाज, **बोटकूळ** आर्य समाज, **नदीवाडी**	१७ अगस्त २०१८ १८ अगस्त २०१८ १९ अगस्त २०१८
पं.श्री सोममुनिजी, परळी **पं.अशोकरावजी कातपुरे** वैदिक विद्वान, नांदेड	आर्य समाज, **मदनसुरी** आर्य समाज, **येलमवाडी** आर्य समाज, **बडूर** आर्य समाज, **कासार बालकुंदा** आर्य समाज,कासार शिरसीता.निलंगा आर्य समाज, **हनुमंतवाडी ता.निलंगा** आर्य समाज, **अंबुलगा ता.निलंगा**	२६, २७ अगस्त २०१८ २८, २९ अगस्त २०१८ ३० अगस्त २०१८ ३१ अगस्त व १ सितम्बर २०१८ २, ३ अगस्त २०१८ ४,५ अगस्त २०१८ ६,७ अगस्त २०१८
श्री तातेराव जगताप, श्री हरिओम कराळे,जानापुर(कर्ना)	आर्य समाज, सय्यद अकुलगा ता.निलंगा	२५, २६ अगस्त २०१८
पं.वशिष्टजी आर्य (वैदिक विद्वान) अंबाजोगाई	आर्य समाज, **बनसारोळा** आर्य समाज, **शिराढोण** आर्य समाज, **बीड**	१८ अगस्त २०१८ १९ अगस्त २०१८ २० अगस्त २०१८
प्राचार्य देवदत्तजी तुंगार, नांदेड	आर्य समाज, **किनवट** आर्य समाज, **उमरी**	२ सितम्बर २०१८ ३ सितम्बर २०१८
पं.अनिल माकणे, धर्माबाद **पं.यादव भांगे**, नांदेड	आर्य समाज, **कंधार** आर्य समाज, **बाराहाळ्ळी** आर्य समाज, **मुखेड**	२५ अगस्त २०१८ २६ अगस्त २०१८ २७ अगस्त २०१८

विद्वानों के नाम	आर्य समाजें	श्रावणी कार्यक्रम
पं.भागवतजी आघाव/ पं.भानुदासजी देशमुख	आर्य समाज,माजलगांव	२७ अगस्त २०१८
डॉ.नयनकुमार आचार्य,परळी श्री गोवर्धनजी चाटे, परळी पं.आर्यमुनिजी, परळी	आर्य समाज,सारडगांव ता.परळी-वै. आर्य समाज,सटाना नाका, मालेगांव आर्य समाज,मांडवा ता.परळी-वै.	१२ अगस्त २०१८ १७,१८,१९ अगस्त २०१८ २९ अगस्त २०१८
पं.तानाजी शास्त्री,परळी प्रा.लक्ष्मीकांत शास्त्री,माजलगांव	आर्य समाज,घाटनांदुर ता.अंबाजोगाई	३० अगस्त २०१८
प्रा.अरुण चव्हाण,परळी	आर्य समाज, गंगाखेड जि.परभणी	२ सितम्बर २०१८
पं.धोंडीराम शेप गुरुजी,जिंतूर	आर्य समाज, मानवत	२६ अगस्त २०१८
पं.विजयकुमारजी अग्रवाल पं.दिगंबर देवकते, परभणी	आर्य समाज, पूर्णा	२ सितम्बर २०१८
सौ.लीलावती जगदाळे पं.दयानन्द शास्त्री, परभणी	आर्य समाज, जिंतूर	१, २ अगस्त २०१८
पं.ज्ञानकुमारजी आर्य, लातूर पं.शेरसिंहजी शास्त्री, लातूर	आर्य समाज, स्वा.सै.कॉलनी,लातूर आर्य समाज, कव्हा ता.ज.लातूर	२६ अगस्त २०१८ २ सितम्बर २०१८
प्रा.डॉ.चंद्रशेखरजी लोखंडे प्रा.ओमप्रकाशजी होलीकर, लातूर	आर्य समाज, पानचिंचोली आर्य समाज, होळी	२६ अगस्त २०१८ २ सितम्बर २०१८
प्रा.चन्द्रेश्वरजी शास्त्री, लातूर सौ.कांचनदेवी शास्त्री, लातूर	आर्य समाज, मुशिराबाद	२६ अगस्त २०१८
श्री माधवराव देशपांडे, पुणे श्री लखमसीभाई केलानी, पुणे	आर्य समाज, अहमदनगर आर्य समाज, कोल्हापुर आर्य समाज, इचलकरंजी	२ सितम्बर २०१८ ३ सितम्बर २०१८ ४ सितम्बर २०१८
प्रा.डॉ.वीरेंद्रजी शास्त्री, परळी प्रा.शरदचंद्रजी झुमणे, लातूर	आर्य समाज, अंधोरी आर्य समाज, येलदरी	१८ अगस्त २०१८ १९ अगस्त २०१८
पं.नारायणरावजी कुलकर्णी	आर्य समाज, अहमदपूर	२ सितम्बर २०१८

विद्वानों के नाम	आर्य समाजें	श्रावणी कार्यक्रम
प्रा.डॉ.नरेंद्रजी शास्त्री(शिंदे) पं.प्रकाशवीरजी आर्य, उदगीर	आर्य समाज, नेत्रगाव ता.उदगीर आर्य समाज, हेर ता.उदगीर	१२ अगस्त २०१८ १९ अगस्त २०१८
प्रा.अर्जुनरावजी सोमवंशी पं.माणिकरावजी टोम्पे,उदगीर	आर्य समाज,चाकूर जि.लातूर आर्य समाज, बोरुळ ता.उदगीर	१९ अगस्त २०१८ २६ अगस्त २०१८
पं.आचार्य सत्येंद्रजी, गुरुकुल,परली स्वा.सै.अमृतमुनिजी, परली	आर्य समाज,वडवळ नागनाथ जि.लातूर	१९ अगस्त २०१८
पं.विज्ञानमुनिजी, परळी पं.म्हाळप्पा दुधभाते, गुंजोटी पं.कर्णसिंहजी आर्य, माडस	आर्य समाज, माडज ता.उमरगा आर्य समाज, कदेर ता.उमरगा आर्य समाज, बेडगा ता.उमरगा आर्य समाज, मुरुम ता.उमरगा आर्य समाज, सास्तूर ता.उमरगा	२ सितम्बर २०१८ ३ सितम्बर २०१८ ४ सितम्बर २०१८ ५ सितम्बर २०१८ ६ सितम्बर २०१८

-० विशेष सूचना ०-

सभी आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि, आप सभी सभाद्वारा प्रदत्त तिथियों के अनुसार ही श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रमों का आयोजन करें । इन कार्यक्रमों में किसी भी प्रकार का परिवर्तन न करते हुए श्रावणी उत्सव उत्साहपूर्वक मनावें । सभाद्वारा भेजे गये विद्वानों से ही कार्यक्रम लेवें, अन्य किसी संगठन द्वारा भेजें विद्वानों के कार्यक्रम न लेवें। वैदिक विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाकर समाज एवं राष्ट्र का कल्याण करने हेतु प्रयास करें । यदि कोई कठिनाई हो तो सभा के पदाधिकारियों से संपर्क करें ।

श्रावणी कार्यक्रमों की सफलता हेतु आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं × साथ ही आमन्त्रित विद्वानों से भी निवेदन है कि वे पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार आर्यसमाजों में वेदप्रचार हेतु समयपर पहुँचे। आज के बदलते परिवेश में समाज व राष्ट्र में सुधार लाने हेतु वेदज्ञान की प्रासंगिकता को प्रभावी ढंग से जन-जन तक पहुँचावे।

-: विनीत :-

योगमुनी	राजेन्द्र दिवे	उग्रसेन राठौर	सुधाकर शास्त्री
(प्रधान)	(मन्त्री)	(कोषाध्यक्ष)	(वेदप्रचार अधिष्ठाता)
	मो. ९८२२३६५२७२		मो.९४२१४८४५४१

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज, परली-वैजनाथ, जि.बीड (महाराष्ट्र)

शतायुषी मातेची हृद्य शताब्दी

जुन्या पीढीतील कर्मठ आर्य कार्यकर्त्या, वैदिक विचारांच्या प्रखर अनुगामी ज्येष्ठ वयोवृद्ध महिला, शतायुषी माता श्रीमती राधाबाई शिवराम जिंदम यांचा जन्म शताब्दी समारंभ नुकताच नांदेड येथे उत्साहात पार पडला. आर्य समाजाच्या वतीने नांदेडच्या वाजेगांव येथील जुन्या सेवाश्रम परिसरात आयोजित या कार्यक्रमात आर्य कार्यकर्ते मोठ्या प्रमाणावर उपस्थित होते.

पं.नारायणराव कुलकर्णी यांच्या पौरोहित्याखाली आयोजित या ÷आयुष्कामेष्टी' यज्ञात माताजीसह त्यांचे सुपुत्र श्री सत्यव्रत जिंदम यजमान म्हणून सपत्नीक उपस्थित होते. यावेळी उपस्थितांनी मातु:श्री राधाबाईंवर पुष्पवृष्टी करीत त्यांना निरामय शताधिक्य आयुष्य चिंतले व उर्वरित जीवन अध्यात्ममय, शांतिपूर्ण व परमेश्वरीय चिंतनात व्यतीत होवो, अशी सदिच्छा व्यक्त केली.

आपल्या आशीर्वादपर मनोगतात श्रीमती राधाबाईंनी आर्यजनांना वैदिक सिद्धांतानुरुप जीवन जगण्याचा सल्ला दिला. त्या म्हणाल्या, ÷÷मला विसरलात, तर चालेल पण आर्य समाजाचा कदापीही विसर पडता कामा नये. कारण आर्य समाज हीच आम्हां सर्वांची आई आहे.''

उल्लेखनीय बाब म्हणजे माता राधाबाईंनी अगदी प्रारंभापासूनच आर्य समाजाच्या विचारांना अंगिकारत वैदिक विचारांच्या प्रसारकार्यात मोलाची भूमिका बजावली. आपले पतिदेव स्व.शिवमुनिजी (जिंदम) यांच्या सेवाकार्यात भरीव योगदान दिले. मुला-मुलींचे आंतरजातीय विवाह घडवून आणले व त्यासाठी इतरांनाही प्रेरित केले आहे. त्यांच्या या परोपकारी कार्याचे आर्य समाजास सदैव स्मरण राहील.या कार्यक्रमास जिंदम कुटुंबासह त्यांच्या कन्यांचा संपूर्ण परिवार उपस्थित होता.ज्येष्ठ जावई प्राचार्य श्री देवदत्त तुंगार यांनीही यावेळी मार्गदर्शन केले. श्रीमती जी.व्ही.मारमपल्ले, सौ.नीता किरकन, सौ.जयश्री भांगे, प्रा.यादव भांगे, सौ.वैदिक, सुशिलाबाई सत्येंद्र चिंचोलीकर, संभाजी देशमुख हे ही या समारंभात सहभागी झाले होते.

शतायुषी माता राधाबाईंना शताधिक्य आयुष्य लाभो व त्यांचे जीवन निरामय ठरो, अशी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा व समस्त आर्यसमाजांतर्फे मनोमन शुभकामना×

राज्यस्तरीय दोन निबंध स्पर्धांचे बक्षीस वितरण

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वतीने डिसेंबर २०१७ मध्ये घेण्यात आलेल्या खालील दोन राज्यस्तरीय निबंध स्पर्धांचे पारितोषिक वितरण दि.२९ एप्रिल २०१८ रोजी परळीत आयोजित श्रद्धानंद सरस्वती जन्मशताब्दी समारंभात करण्यात आले. ज्येष्ठ विचारवंत स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठाचे संस्थापक कुलगुरु डॉ.जे.एम.वाघमारे(माजी खासदार) यांच्या हस्ते विजेत्यांना पुरस्कार राशी, ग्रंथसंपदा व प्रमाणपत्र देऊन त्यांचा सन्मान करण्यात आला. यावेळी स्पर्धेचे यजमान डॉ.मधुसूदन व डॉ.सौ.अनुराधा काळे, स्वामी श्रद्धानन्दजी व इतर मान्यवर उपस्थित होते.

डॉ.सौ.विमलादेवी व डॉ.श्री सु.ब.काळे गौरव महाविद्या.निबंध स्पर्धा

प्रथम – कु.निकिता देविदास तपके(रु.२०००/–)कै.ल.दे.महिला महाविद्या.,परळी

द्वितीय– कु.पद्मजा शिवाजीराव शिंदे (रु.१५००/–)फर्ग्युसन कॉलेज, पुणे

तृतीय–कु.शुचिता अशोक जाधव (रु.११००/–)सिद्धेश्वर महाविद्यालय, माजलगांव

सौ.ताराबाई व श्री प्रा.जयनारायणजी मुंदडा गौरव विद्या.निबंध स्पर्धा

प्रथम – कु.मनीषा राकेश खाटीक (रु.१५००/–) न्यू हायस्कूल, परली–वै.

द्वितीय– वैभव भानुदास डोणे (रु.१०००/–)सिद्धेश्वर विद्यालय, माजलगांव

तृतीय–कु.मोहिनी राजशेखर जोडमारे (रु.७५०/–) दयानन्द असावा प्रशाला सोलापुर

वरील सर्व यशस्वी विजेत्या स्पर्धकांचे हार्दिक अभिनंदन व शुभेच्छा×

चला जाऊ आर्य महासम्मेलनाला×

सार्वदेशिक आर्य प्रतीनिधी सभा व दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे आयोजित

आंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन २०१८

दि.२५ ते २८ ऑक्टोबर २०१८

स्थळ : सुवर्ण जयंती पार्क, रोहिणी सेक्टर–१०, दिल्ली

सर्व आर्यसमाजी कार्यकर्त्यांनी व धर्मप्रेमी, राष्ट्रप्रेमी बंधु–भगिनींनी या महासम्मेलनात अवश्य सहभागी व्हावे× आतापासूनच रेल्वेचे आरक्षण करावे व येण्याकरिता इतरांनाही प्रेरणा द्यावी.(विस्तृत बातमी पुढील अंकात...)

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

श्रेष्ठ मानव बनों × **वेदों की ओर लौटो !**

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
ार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. ३३३/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

मानव कल्याणकारी उपक्रम

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिबिर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिबिर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

निबंध स्पर्धा २०१७ पुरस्कार वितरण

प्रान्तीय सभा के सौ.व श्री डॉ.काले महाविद्यालयीन निबन्धस्पर्धा का पुरस्कार वितरण करते हुए डॉ.जे.एम.वाघमारे। साथ में हैं डॉ.मधुसुदनजी एवं डॉ.सौ.अनुराधा काले।

द्वितीय पुरस्कार प्रदान करते हुए डॉ.वाघमारेजी। साथ में काले दम्पत्ती।

सौ.व श्री जय नारायण मुंदडा गौरव विद्यालयीन निबंध स्पर्धा का पुरस्कार प्रदान करते हुए डॉ.श्री वाघमारेजी। साथ में है स्वामी श्रद्धानन्दजी।

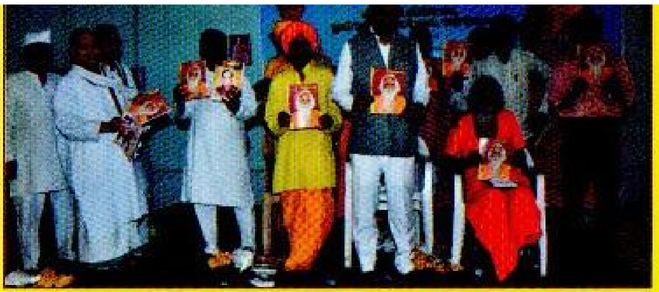

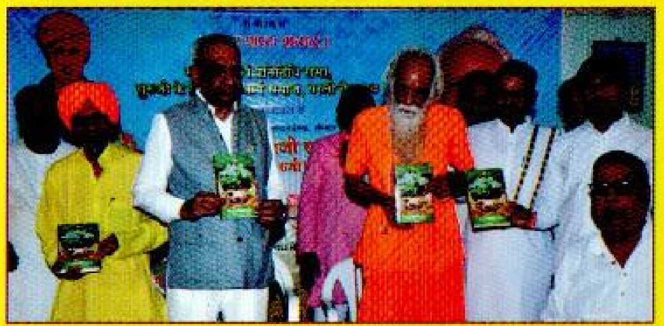

REG.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/24/2018-2

सेवा में,
श्री ....

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' के संपर्क कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया